अणुविभा जयपुर केन्द्र,

आचार्य तुलसी मार्ग, (गौरव टॉवर के सामने) मालवीय नगर, जयपुर-17

फोन : 91-141 **2724490**,

प्रेस विज्ञप्ति

''मुनिश्री विनयकुमारजी ''आलोक'' की मुख्यमंत्री से भेंट''

जैन द-ान वि-वव्यापी समस्याओं का समाधान - मुख्यमंत्री

जयपुर 15 नवम्बर, 09

जैन द-ान महत्वपूर्ण द-ान है। वर्तमान स्थितियों में जैन धर्म का सिद्धान्त अति महत्वपूर्ण साबित होता है। अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह महावीर के तीन सूत्र ऐसे है जो वि-वव्यापी समस्याओं का समाधान देते हैं। ये :ाब्द मुख्यमंत्री अ-ाोक गहलोत ने मुख्यमंत्री कक्ष में मुनिश्री विनयकुमारजी 'आलोक' से परीचर्चा करते हुए कहे।

श्री गहलोत ने आगे कहा :- अहिंसा एक ऐसा समाधान है जिसके द्वारा आंतकवाद को समाप्त किया जा सकता है आतंक की समस्या वि-वव्यापी है। इस समस्या के समाधान के लिए अहिंसा अचूक साधन है। आतंक पैदा क्यों होता है, उसके पीछे अर्थ की प्रमुखता है एक तरफ पहाड़ सी ऊंचाई दूसरी ओर फ-ातल सी ऊंचाई। अर्थाभाव से कुछ भी कर सकता है पेट की ज्वाला :ाांत करना पहला कार्य है ऐसी स्थिति में मितव्यता की और ध्यान दिया जावे तो समस्याओं का निराकरण नि-चित रूप से किया जा सकता है और व्यक्ति :ाान :ौकत में जी रहा है, :ाान केवल अर्थ से ही नहीं होती, :ाान का आधार तल है ज्ञान। उन्होंने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा जैन संतो की जीवन दीनचर्या सबसे कठिन है क्योंकि उनका संयम सारणी और सहजता प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती है। उन्होंने बात को मोड़ देते हुए कहा आज ही समाचार पत्रों में पढ़ा दो जैन संतो का सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया।

मुनिश्री विनयकुमारजी ''आलोक'' ने कहा :- आज पूरा वि-व समस्याओं से ग्रस्त है। ज्यों-ज्यों विज्ञान का विकास हुआ है त्यों-त्यों समस्याए द्रोपती के चीर की भांती बढ़ती जाती है। ज्यों-ज्यों दवा का मर्ज बढ़ता गया ऐसी स्थिति में सामाजिक और पारिवारिक जीवन विभक्त होता जा रहा है राजनैतीक दल टूट रहे है साम्प्रदायिकता बढ़ रही है। हर सम्प्रदाय के ही अनेक सम्प्रदाय बन रहे है। स्थिति दिन प्रतिदिन भयावह होती जा रही है। ऐसी स्थिति का निर्माण किसने किया यह प्र-नवाचक है ये कार्य एक व्यक्ति का नहीं उसमें प्रति व्यक्ति का सहयोग मिलता है, तब स्थितियां ऐसी पैदा होती है। मुनिश्री ने मुख्य मंत्री द्वारा चलाये गये मितव्यता (संयम) आन्दोलन की प्रसं-ाा करते हुए कहा यदि हर व्यक्ति संयम और सादगी की साधना प्रारम्भ करें तो क्या दे-ा पुनः सोने की चिड़िया नहीं बन सकता। आज दिखावा, प्रद-ान में व्यक्ति का वि-वास हो गया है, उसे छोड़ा जाना चाहिए उसे संयम और सादगी की मि-ाल दी जानी चाहिए जिससे एक नये समाज का निर्माण हो सकता है। वार्तालाप में सुधीर :ार्मा, छगन जैन उपस्थित थे।

मुनिश्री ने आज पी-13, सहदेव मार्ग सी-स्कीम स्थिति उत्तमचन्द जी सेठिया के आवास से विहार कर बापु नगर पहुंचे।

मुके-ा मोयल

9982936502